पत्र सूचना कार्यालय (रक्षा विंग)
भारत सरकार
****
'हर काम देश के नाम'

नई दिल्लीः ज्येष्ठ 23, 1944
सोमवारः 13 जून 2022

रक्षा मंत्री ने लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में 28वें संयुक्त सिविल-सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह को संबोधित किया

राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने और संभावित ग्रे ज़ोन संघर्षों से निपटने के लिए अधिक से अधिक सिविल-सैन्य सहयोग को अनिवार्य बताया

हाइब्रिड खतरों से निपटने के लिए सिविल प्रशासन और सशस्त्र बलों के बीच संवाद बढ़ाने का आह्वान

भारत एक शांतिप्रिय राष्ट्र है, लेकिन बुरी नजर डालने वाले को मुंहतोड़ जवाब भी देगा: श्री राजनाथ सिंह

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने राष्ट्रीय सुरक्षा को और मजबूत करने तथा ग्रे जोन संघर्षों से निपटने के लिए सिविल प्रशासन और सशस्त्र बलों की अधिक से अधिक सहयोग का आह्वान किया है, जो लगातार विकसित हो रही वैश्विक स्थिति से उत्पन्न हो सकते हैं। रक्षा मंत्री उत्तराखंड के मसूरी में 13 जून 2022 को लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी (एलबीएसएनएए) में 28वें संयुक्त सिविल-सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। रक्षा मंत्री ने कहा कि सैन्य हमलों से सुरक्षा के सामान्य पहलू में बहुत से गैर-सैन्य पहलू जोड़े जाने से राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा का विस्तार हुआ है।

श्री राजनाथ सिंह ने रूस-यूक्रेन स्थिति और इसी तरह के अन्य संघर्षों को दुनिया के सामने वर्तमान में आने वाली पारंपरिक युद्ध से परे चुनौतियों का प्रमाण बताया। उन्होंने कहा, "युद्ध और शांति अब दो भिन्न स्थितियां नहीं हैं, बल्कि इनमें एक निरंतरता है। शांति के दौरान भी कई मोर्चों पर युद्ध जारी रहता है। एक व्यापक युद्ध एक देश के लिए उतना ही घातक है जितना कि यह अपने दुश्मनों के लिए है। इसलिए, पिछले कुछ दशकों में व्यापक युद्धों को टाला गया है। उन्हें परोक्ष और गैर-लड़ाकू युद्धों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। प्रौद्योगिकी, सप्लाई लाइन, सूचना, ऊर्जा, व्यापार व्यवस्था, वित्त व्यवस्था आदि को अस्त्र के रूप में प्रयोग किया जा रहा है, जिसका इस्तेमाल आने वाले समय में हमारे खिलाफ हथियार के रूप में किया जा सकता है। सुरक्षा चुनौतियों के इस व्यापक दायरे से निपटने के लिए लोगों के सहयोग की जरूरत है"। उन्होंने इन चुनौतियों से निपटने के लिए 'संपूर्ण राष्ट्र', 'संपूर्ण सरकार' और उससे आगे 'संपूर्ण समाज' दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

रक्षा मंत्री ने जोर देकर कहा कि सरकार द्वारा चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के पद के सृजन और सैन्य मामलों के विभाग की स्थापना के साथ सिविल-सैन्य संयुक्तता की पूर्ण प्रक्रिया शुरू की गई है। उन्होंने कहा कि ये फैसले देश को भविष्य के लिए तैयार करने में सहायक साबित हो रहे हैं, यहां तक कि व्यापक युद्ध के लिए भी। उन्होंने कहा कि सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण और रक्षा क्षेत्र को 'आत्मनिर्भर' बनाने के लिए उठाए गए कदमों के परिणाम मिलने शुरू हो गए हैं। उन्होंने कहा कि

प्रधानमत्री श्री नरेन्द्र मोदी की 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' परिकल्पना के अनुरूप अब भारत न केवल अपने सशस्त्र बलों के लिए उपकरणों का निर्माण कर रहा है, बल्कि मित्र देशों की जरूरतों को भी पूरा कर रहा है।

रक्षा मंत्री का विचार था कि जब तक हाइब्रिड खतरों से निपटने के लिए सिविल प्रशासन और सशस्त्र बलों के बीच साइलो को दूर नहीं किया जाता है, तब तक राष्ट्र भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए पर्याप्त तैयारी की उम्मीद नहीं कर सकता है। हालांकि, उन्होंने कहा कि तालमेल का मतलब एक-दूसरे की स्वायत्तता का उल्लंघन करना नहीं है; बल्कि इंद्रधनुष के रंगों की भांति किसी की पहचान का सम्मान करते हुए एक साथ काम करना है।

श्री राजनाथ सिंह ने विश्वास व्यक्त किया कि लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में संयुक्त सिविल-सैन्य कार्यक्रम जैसे सिविल-सैन्य एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने आशा व्यक्त की कि राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में समन्वय और सहयोग की समझ विकसित करने में यह कार्यक्रम सिविल कर्मचारियों और सशस्त्र बलों के अधिकारियों के लिए उपयोगी साबित होगा।

रक्षा मंत्री ने विचार व्यक्त किया कि आजादी के बाद, भारत ने शासन की पुरानी प्रथा का पालन किया और इसने लोगों की सुरक्षा और समृद्धि के लिए विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थानों और मंत्रालयों/विभागों का निर्माण किया। उन्होंने कहा कि भारत जैसे विशाल देश के सुचारू संचालन के लिए काम का विभाजन आवश्यक था, लेकिन समय के साथ विभागों और मंत्रालयों में काम काज के बीच परस्पर संवाद का अभाव आने लगा।

श्री राजनाथ सिंह ने जोर देकर कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने काम काज के दृष्टिकोण में बदलाव किया है। उन्होंने कहा कि इस नए दृष्टिकोण, जिसके साथ सरकार अब काम कर रही है ने राष्ट्र के समग्र विकास को सुनिश्चित किया है।

रक्षा मंत्री ने पिछले कई दशकों में लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी द्वारा राष्ट्र को दी गई सेवा को अद्वितीय बताते हुए कहा कि संस्थान अपने प्रशिक्षण के माध्यम से सिविल सेवा अधिकारियों को तैयार कर रहा है, जिन्हें देश की प्रणाली के स्टील फ्रेम के रूप में जाना जाता है और राष्ट्र की समृद्धि में योगदान दे रहा है। श्री राजनाथ सिंह ने पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को भी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की जिन्होंने राष्ट्र के उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित किया। शास्त्री जी ने देश में 'एकता' और 'अखंडता' के विचार का सम्मान किया था। जनता से लेकर प्रशासन तक, वह काम को एकता की दृष्टि से देखने में विश्वास करते थे। पिछले दो दशकों से संचालित यह संयुक्त सिविल सैन्य कार्यक्रम शास्त्री जी के उस दृष्टिकोण को आगे बढ़ा रहा है।

संयुक्त सिविल-सैन्य कार्यक्रम 2001 में राष्ट्रीय सुरक्षा की साझा समझ के लिए सिविल कर्मचारियों और सशस्त्र बलों के अधिकारियों के बीच संरचित इंटरफेस को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। प्रतिभागियों को सिविल सेवाओं, सशस्त्र बलों और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों से लिया जाता है। इसका उद्देश्य प्रतिभागियों को राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रबंधन, उभरते हुए बाहरी और आंतरिक सुरक्षा वातावरण और वैश्वीकरण के प्रभाव के लिए चुनौतियों से परिचित कराना है; प्रतिभागियों को इस विषय पर विचारों के प्रति अंतःक्रिया करने और आदान-प्रदान करने तथा उन्हें सिविल-सैन्य तालमेल की अनिवार्यताओं के प्रदर्शन हेतु अवसर प्रदान करना है।

एबीबी/डीएस/आरपी

चित्र परिचयः

चित्र 1 से 5: रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह उत्तराखंड के मसूरी में 13 जून 2022 को लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी (एलबीएसएनएए) में 28वें संयुक्त सिविल-सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए।